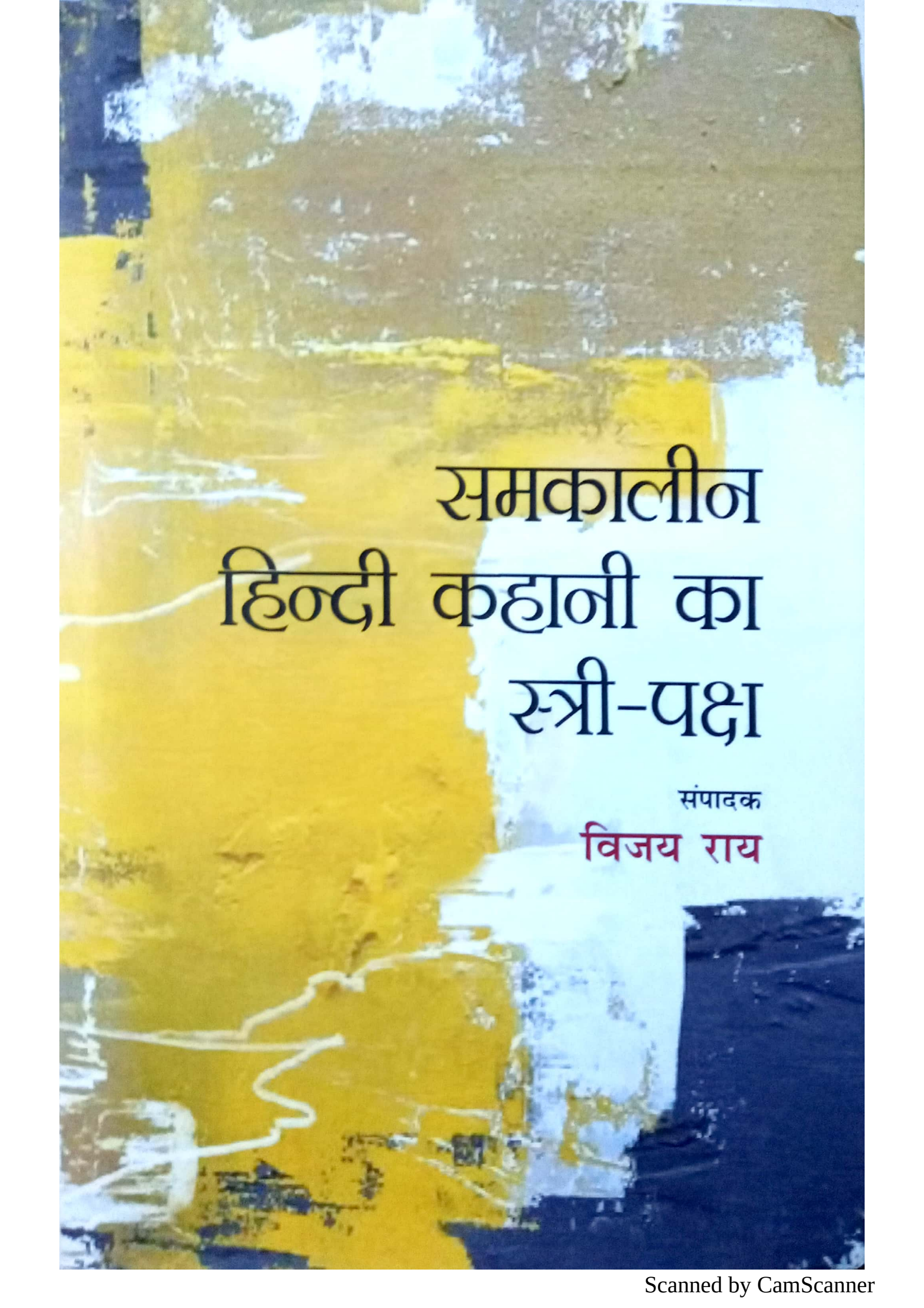




समकालीन हिन्दी कहानी का स्त्री-पक्ष

संपादक
विजय राय



प्रकाशक : अनन्य प्रकाशन

ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा

दिल्ली-110032

फोन नं. 011-22825606, 22824606

E-mail : prakashanananya@gmail.com

© सर्वाधिकार : संपादक

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN : 978-81-951097-7-7

मूल्य : ₹ 995

शब्द-संयोजन : कम्प्यूटेक सिस्टम, दिल्ली-110032

मुद्रक : लकी प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

SAMKALEEN HINDI KAHANI KA STRI PAKSH
Edited by Vijay Rai

क्रम

चित्रा मुद्गल : प्रामाणिक अनुभवों के ताप से निःसृत कहानियाँ	डॉ. हेमराज कौशिक	13
ममता कालिया : जंजीरें तोड़, अँधेरे से बाहर निकलती औरत	जोने प्रकाश मिश्र	23
मृदुला गर्ग : उनका हकीकत और जोखिम भरे यथार्थ से गर्भनाल का रिश्ता है	प्रज्ञा पाण्डेय	30
मंजुल भगत : स्त्री-मन के रहस्य लोक की कुंजी	डॉ. स्मृति शुक्ल	39
सूर्यबाला : सामाजिक विसंगतियों से जूझती कहानियाँ	डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	47
चन्द्रकांता : सन्तुलन की बेहद मर्मस्पर्शी रचनाकार	प्रांजल धर	56
सुधा अरोड़ा : भूमंडलीकरण के संवेदनात्मक आयाम उकेरती कहानियाँ	ओम्प्रकाश मिश्र	62
नासिरा शर्मा : विस्तृत वितान की कहानियाँ	विजय शर्मा	69
मेहलन्सिा परवेज : बहकने से दहकना कम हो जाता है	डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	81
नमिता सिंह : मजबूत स्त्री और उसकी मजबूत छवि की प्रस्तुति	मन्दीपा जैन	91
शीला रोहेकर : कथारस के नये आस्वाद की कहानियाँ	उषासन्ना	97
दीपक शर्मा : कस्बापुर का चमड़े का अहाता है लेखिका का कथा-जगत	मधु बी. जोशी	102
सुमित सक्सेना लाल : सूक्ष्म अंतर्द्वंद्व की रचनाकार	श्रुति	110
मैत्रेयी पुष्पा : समकालीन स्त्री-विमर्श के आइने से	अनुराधा गुप्ता	116
उषा किरण खान : यहाँ स्त्रियाँ जीवन संघर्ष की रीढ़ हैं	प्रज्ञा पाण्डेय	128
मधु कांकरिया : मानवीय गरिमा और संघर्षों की कहानियाँ	उषा राय	135
रोहिणी अग्रवाल : स्त्री के अंतर्मन का आलोक	श्रुति सुधा आर्य	141

मेहरून्निसा परवेज

बहकने से दहकना कम हो जाता है

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

दुख जीवन का नमक है। इसके साथ किस तरह का सामन्जस्य बिठाकर, इसे किस तरह अपनाकर चलते हैं, इस बात का प्रभाव जीवन पर, दृष्टिकोण पर और लेखक हैं तो रचनात्मकता पर पड़ता है। 'पद्मश्री' मेहरून्निसा परवेज राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त परिपक्व लेखिका हैं। भारतीय समाज और संस्कृति के रूप, रस, रंग और सुगंध में रची बसी लेखिका के पास परिवेश के अनुकूल भाषा है। वे भारतीय समाज के हर परिवर्तन, हर अभाव और हर आवश्यकता की जानकारी रखती हैं, जैसा कि हर लेखक के लिए आवश्यक है। उनके अनेक उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। इस संग्रह की प्रतिनिधि कहानियों को पढ़ते हुए मेरा लेखिका से यह पहला परिचय है, जो कि सुखद है। मेहरून्निसा जी के उद्देश्य में पवित्रता है। कथ्य में नयापन और चौंकाने वाले तत्व न होते हुए भी एक अपनापन है। मिठास है। समाज की परम्परागत सोच, विचारधारा को दर्शाने वाले, प्रभावित करने वाले वाक्य हैं, मुहावरे हैं किन्तु कहानी हृदय में आलथी-पालथी मारकर बैठ जाए वह तत्व नहीं है। इस अभाव का कारण भी समझ में आता है, कि पीड़ा का कारण छोटा हो या बड़ा, बेवजह हो या बावजह उसका अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण मन में उत्पन्न करूणा को बेदखल कर देता है साथ ही यह कि कई कहानियों में भाषा के प्रयोग में लेखिका असावधानी बरतती हैं।

तेरह प्रतिनिधि कहानियों में 'ढहता कुतुबमीनार' कहानी की नायिका सपना को उसके मेजर पति ने अपनी प्रेमिका के कारण तलाक दे दिया, वह इस बात से पीड़ित होती तो बात ठीक लगती किन्तु उसके भाई की असंगत बातें, बेवजह पीड़ा का अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण लगती हैं। वह कहता है-“पता नहीं तुम कैसा भाग्य लेकर आई थीं, तुम्हें सबने बोझ समझा और तुम्हारी हर जिम्मेदारी से कतराते रहे